ISSN: 0973-0583

बिहार प्रान्त में विद्यालयों एवं उच्च स्तर पर भूगोल शिक्षण की स्थिति एवं विकास : एक शिक्षाशास्त्रीय अध्ययन

कुमारी रीना सिन्हा

शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, जे0 एस0 विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद, (उ0 प्र0)

सार

स्वतंत्रता के पूर्व बिहार के कुछ ही विद्यालयों एवं महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में भूगोल की पढ़ाई की जाती थी। यहाँ के पटना विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम 1934 ई0 में पटना कॉलेज में भूगोल की पठन-पाठन आरम्भ किया गया। इसके साथ यहाँ के विद्यालयों में भी भूगोल शिक्षण आरम्भ किया गया है। इसके बाद 1954ई0 में राँची विश्वविद्यालय (तत्कालीन बिहार) में भूगोल का पठन-पाठन आरम्भ किया गया और आगे चलकर भागलपुर विश्वविद्यालय,भागलपुर,बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, जे0पी0 विश्वविद्यालय, छपरा, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बी0 एन0 मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा एवं पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना, मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर एवं पूर्णियाँ विश्वविद्यालयों में भूगोल शिक्षण कार्य प्रारम्भ किया गया। बिहार राज्य के 9243 माध्यमिक एवं उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों में सामाजिक विज्ञान के एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में भूगोल विषय को पढ़ाया जाता है। इस विषय का भविष्य उज्ज्वल है।

शब्द कुंजिका : शिक्षण संस्थान, विद्यालय, विश्वविद्यालय, भूगोल शिक्षण, सामाजिक विज्ञान।

प्राचीन काल से ही हमारे ऋषि-महर्षि प्रकृति के साम्य वातावरण में साधनारत ऋषि, महर्षि, चिंतक, विचारक एवं दार्शनिक विभिन्न स्थलाकृतियाँ, हरे-भरे वनस्थली, हिम मंडित पर्वतों, नदी-नालों, झील-झरने, पहाड़ा, पठार, मैदान एवं जंगल के वादियों का बड़ा ही सुन्दर वर्णन अपने गायन और उद्‌बोधन में किया है। उनका प्रचार-प्रसार क्रमबद्ध रूप में नहीं था, परन्तु प्राकृतिक दृश्यों का सुन्दर वर्णन उनके गायन एवं अभिभाषणों में था। रोझन दार्शनिक प्लूटो, अरस्तू, प्लेटो एवं टालेमी इत्यादि ने प्रकृति का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है। अंग्रेजी शासन काल में यहाँ के बहुत ही कम विद्यालयों में भूगोल की पढ़ाई की जाती थी। आजादी के बाद बिहार राज्य में विद्यालयों में भूगोल का पठन-पाठन आरम्भ किया गया। माध्यमिक एवं उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों में भूगोल का पठन-पाठन आरम्भ किया गया। भौगोलिक पर्यटन प्राय: समाप्त होते जा रहा है। इस प्रकार वर्तमान स्थिति में शिक्षक, छात्र और अधिकारिक स्तर से कहीं-न-कहीं कुछ गिरावट आयी है।

अध्ययन का उद्देश्य :

वर्तमान शोध पत्र का अध्ययन निम्नांकित उद्देश्यों से किया गया है-

1. भूगोल अध्ययन का महत्व एवं विषय क्षेत्र का जानकारी प्राप्त करना।
2. भूगोल अध्ययन से विद्यार्थियों के लाभ के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
3. वर्तमान समय में स्कूलों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में भूगोल शिक्षण का स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करना एवं उसके उत्थान के लिए उपायों का अध्ययन करना।
4. भूगोल अध्ययन से फायदे को ज्ञात करना।
5. भूगोल शिक्षण के विकास पर ध्यानाकृष्ट करना।

परिकल्पना :

वर्तमान शोध पत्र निम्नांकित परिकल्पनाओं पर आधारित है-

1. बिहार में सामाजिक विज्ञान के महत्वपूर्ण विषय के रूप में भूगोल का अध्ययन किया जाता है।
2. भूगोल के अध्ययन से विश्व के भौगोलिक एवं सामाजिक स्थिति की जानकारी प्राप्त किया जाता है।
3. भूगोल मानव के उद्‌गम और विकास के बारे में जानकारी देता है।

अध्ययन विधि :

वर्तमान अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़े पर आधारित है। इसमें भूगोल के अनेक पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों एवं शोध प्रबन्धों का सहयोग लिया गया है। इन तमाम साधनों से बिहार में भूगोल के शिक्षा का विकास का जानकारी प्राप्त किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र :

अध्ययन क्षेत्र बिहार राज्य है जिसका विस्तार $24^0$20' उत्तरी अक्षांश से लेकर $27^0$31'15'' उत्तरी अक्षांश तक एवं $83^0$19'59'' पूर्वी देशान्तर से 88017'40'' पूर्वी देशान्तर तक विस्तृत है। इसका क्षेत्रफल 94163 वर्ग किलोमीटर और यहाँ की आबादी 10.41 करोड़ (2011) है। यह उत्तर से दक्षिण 345 किलोमीटर चौड़ा और पूरब से पश्चिम 483 किलोमीटर लम्बा है। यहाँ देश के कुल क्षेत्रफल का 2.86 प्रतिशत भूमि और कुल आबादी का 8. 07 जनसंख्या निवास करती है। इसके उत्तर में नेपाल, दक्षिण में झारखण्ड, पूरब में पश्चिम बंगाल और पश्चिम में उत्तर प्रदेश है।

भूगोल शब्द की उत्पत्ति अंग्रेजी भाषा का "Geographea" से हुआ है। Geo का अर्थ भूमि और Graphea का अर्थ वर्णन करना है, अर्थात् भूगोल वह विज्ञान है जिसमें पृथ्वी का वर्णन किया जाता है। प्राचीन काल से ही हमारे ऋषि-महर्षि प्रकृति के साम्य वातावरण में साधानारत ऋषि, महर्षि, चिंतक, विचारक एवं दार्शनिक विभिन्न स्थलाकृतियाँ, हरे-भरे वनस्थली, हिम मंडित पर्वतों, नदी-नालों, झील-झरने, पहाड़ा, पठार, मैदान एवं जंगल के वादियों का बड़ा ही सुन्दर वर्णन अपने गायन और उद्‌बोधन में किया है। उनका प्रचार-प्रसार क्रमबद्ध रूप में नहीं था, परन्तु प्राकृतिक दृश्यों का सुन्दर वर्णन उनके गायन एवं अभिभाषणों में था। रोझन दार्शनिक प्लूटो, अरस्तू, प्लेटो एवं टालेमी इत्यादि ने प्रकृति का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है। भारतीय कवियों ने भी प्रकृति का बड़ा ही सुन्दर घटा का वर्णन किया है जिनमें आदि कवि कालीदास एवं संत शिरोमणी तुलसीदास प्रमुख हैं। इस प्रकार प्रारंभिक काल से ही ऋषि-महर्षि एवं दार्शनिकों इत्यादि के द्वारा प्रकृति के चित्रण के क्रम में भौगोलिक तथ्यों का वर्णन किया गया है। आधुनिक भूगोल का आधारशीला के रूप में जमीन भूगोल हम्बोल्ट एवं रीटर का नाम उल्लेखनीय है। हम्बोल्ट अपने जीवन काल में देश-विदेशों की लम्बी यात्रा किया और भौगोलिक तथ्यों का वर्णन किया। कॉसमॉस इनकी महत्वपूर्ण कृति है। रीटर महोदय का भी बहुत बड़ा योगदान है। इनकी महत्वपूर्ण कृति 'अर्नडकुंड' ग्रंथमाला है। इनके अलावे आधुनिक भूगोलवेत्ताओं में हेटनर, रीचथोपेन, रेटेजल डी-लॉ-ब्लॉश, कुमारी सेम्पुल, एल० डी० स्टाम्प, थार्नबरी, एस०पी० चटर्जी, डॉ० दयाल, डॉ० आ०पी० सिंह, डॉ० एल०एस० भट्ट, डॉ० आर०पी० मिश्रा, डॉ० आर०एल० सिंह, डॉ० माजिक हुसैन, डॉ० इनायत अहमद, शरीख भूगोलवेत्ताओं ने भौगोलिक ज्ञान का संवर्द्धन का कार्य किया है। उपरोक्त महान भूगोलवेत्ताओं ने भौगोलिक ज्ञान का संवर्द्धन एवं भूगोल के पठन-पाठन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा किया है। इनके शिष्यों द्वारा आज भी दुनिया के विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में भौगोलिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार का अलख जगाया जा रहा है।

अनेक भूगोलवेत्ताओं द्वारा भूगोल को परिभाषित किया गया है। मौंक हाउस के अनुसार-"Geography comprises the study of the Earth surface in its areal differenciations as the home of man." अर्थात् भूगोल पृथ्वीतल का उसकी क्षेत्रीय भिन्नता के साथ मानवीय निवास के रूप में अध्ययन है। हेटनर ने भूगोल को परिभाषित करते हुए कहा है- भूगोल क्षेत्र विज्ञान है, जिसमें पृथ्वीतल के क्षेत्रों का अध्ययन उनकी विभिन्नताओं तथा स्थानिक सम्बन्धों की पृष्ठभूमि में किया जाता है।

उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भूगोल पृथ्वी और उसके तल पर रहने वाले प्राणियों का मात्र अध्ययन नहीं है। यह उससे भी विस्तृत है। भूगोल पृथ्वी का स्थलमंडल, जलमंडल, वायुमंडल के अलावा मानव और उनके कार्य-कलापों का अध्ययन करता है। इनके अलावे भूगोल में प्रादेशिक जैवमंडल पर्यावरण एवं उनके दशाओं का अध्ययन किया जाता है।

अंग्रेजी शासन काल में यहाँ के बहुत ही कम विद्यालयों में भूगोल की पढ़ाई की जाती थी। आजादी के बाद बिहार राज्य में विद्यालयों में भूगोल का पठन-पाठन आरम्भ किया गया। माध्यमिक एवं उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों में भूगोल का पठ्न-पाठन आरम्भ किया गया। बिहार के विद्यालयों में भूगोल के पठ्न-पाठन को बढ़ावा देने में प्रो० (डॉ०) परमेश्वर दयाल का महत्वपूर्ण भूमिका है। डॉ० दयाल लिखित 'भू परिचय', शुक्ला बुक डिपो, पटना द्वारा प्रकाशित पुस्तक का बहुत योगदान है। इसमें भौतिक भूगोल, एशिया, यूरोप, उत्तरी अमेरिका, द० अमेरिका, अफ्रिका, आस्ट्रेलिया सभी महादेशों का वर्णन था। इसके

अलावे भारत का भी वर्णन इस पुस्तक में किया गया था। यहाँ के ऊँच एवं उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों में सुरेश प्रसाद का 'भू मंडल' का भी योगदान है। इसमें भी भौतिक भूगोल के अलावे सभी महादेश एवं भारत के भूगोल का विशद व्याख्या किया गया था। लगभग सभी माध्यमिक एवं उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों में भूगोल का पठन-पाठन आरंभ हो गया था।

राज्य के कुछ खास महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में भूगोल का पठन-पाठन आरंभ किया गया। इन महाविद्यालयों में एच० डी० जैन कॉलेज, आरा, नालंदा कॉलेज, बिहार शरीफ, टी० एन० बी० कॉलेज, भागलपुर, एल० एस० कॉलेज, मुजफ्फरपुर, आर०के० कॉलेज, मधुबनी, गया कॉलेज, गया, सरदार पटेल कॉलेज, बिहारशरीफ, राँची कॉलेज, राँची, सेंट कोलम्बस कॉलेज, हजारीबाग इत्यादि कॉलेजों में भूगोल की पढ़ाई शुरू किया गया। 1980 के बाद नये बोले जाने वाले प्राय: सभी सम्बन्धन प्राप्त कॉलेजों में भूगोल की पढ़ाई आरम्भ किया गया। साथ ही राज्य के विश्वविद्यालयों पटना विश्वविद्यालय, राँची विश्वविद्यालय (झारखण्ड), बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर में भूगोल की पढ़ाई आरम्भ किया गया। प्रारंभिक काल में सीट लिमिटेड थी। प्रत्येक क्लास में 16-20 सीटों में नामांकन की व्यवस्था थी। वर्तमान समय में भूगोल विषय में छात्रों का बहुत रूझान है। अच्छे अंक मिलता है। साथ ही प्रायोगिक पेपर में भी अच्छा अंक मिल जाता है। प्रतियोगिता परीक्षा में भी भूगोल विषय का चयन करके इसमें अधिक अंक प्राप्त कर सफलता हासिल कर रहे हैं।

इस प्रकार बिहार में भूगोल के विकास में डॉ० दयाल एवं सुरेश प्रसाद के अलावे डॉ० राम प्रवेश सिंह, डॉ० इनायत अहमद, डॉ० अयोध्या प्रसाद, डॉ० मुरारी पाठक, डॉ० करीमी, डॉ० एल० एन० राम, डॉ० मैनेजर प्रसाद, डॉ० भी० एन० पी० सिन्हा, डॉ० सुरेश नन्दन प्रसाद, डॉ० राणा प्रताप, डॉ० सुरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, डॉ० आर०बी० मंडल, डॉ० जी०एन० शर्मा, डॉ० आर०बी०पी० सिंह, डॉ० आद्या शरण, डॉ० टुनटुन झा अचल, डॉ० शिवशंकर सिंह, डॉ० नर्मदेश्वर प्रसाद, डॉ० शिवमुनि यादव, डॉ० मो० अताउल्लाह, डॉ० डी०पी० सिंह, डॉ० राधेश्याम प्रसाद, डॉ० केशव यादव, डॉ० विद्यासागर यादव, डॉ० शिव कुमार यादव, डॉ० रामावतार यादव, डॉ० वी०के० सिंह, डॉ० के० एन० पासवान, डॉ० हीरालाल सिंह, डॉ० एस०एस० प्रसाद, प्रो० रासबिहारी प्रसाद सिंह, डॉ० रामलगन प्रसाद, डॉ० रश्मि, डॉ० पूर्णिमा शेखर, डॉ० अनुराधा सहाय, डॉ० पुष्पा सिंह, डॉ० बी०एन० सिंह, डॉ० गणेश शर्मा, डॉ० नवीन कुमार, डॉ० सुदेश्वर सिंह इत्यादि शरीखे भूगोलवेत्ताओं ने महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों भूगोल के प्राध्यापक के रूप में कार्य किया है और इसके संवर्द्धन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रारंभिक काल से लेकर 2015 तक सभी महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में भूगोल विषय में स्तरीय शिक्षा प्रदान किया जाता रहा है। सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक शिक्षण कार्य सुचारू रूप से सम्पादन होता रहा है। 2015 के दशक के बाद इसमें कुछ गिरावट होने लगा। वर्ग व्यवस्था में ह्रास, छात्रों की उपस्थिति में कमी, प्रायोगिक वर्ग के संचालन में ह्रास होने लगा।

निष्कर्ष:

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए भूगोल की जानकारी आवश्यक है। इस विषय में पठन-पाठन को सुदृढ़ करने की जरूरत है। कम्प्यूटर का शिक्षा भी भूगोल में एक पेपर के रूप में पढ़ाने की व्यवस्था होनी चाहिए। विद्यार्थियों की उपस्थिति को बढ़ाने के साथ शिक्षकों को विषय के संवर्द्धन के प्रति कादार होने की आवश्यकता है। बिहार के विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में बड़े-बड़े भूगोलवेत्ता को पैदा किया है, जिन्होंने देश-विदेश में अपने ज्ञान का परचम फहराने का कार्य किया है। भविष्य में भी इसके विकास की आवश्यकता है। बिहार राज्य में 9243 ऊँच एवं उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों में भूगोल का पठन-पाठन किया जा रहा है। साथ ही सभी विश्वविद्यालयों में भी भूगोल की पढ़ाई की जा रही है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची :

1. सिंह, डी०पी० (2013), भौगोलिक चिंतन की समीक्षा, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. कौशिक, एस०डी० (1995), भौगोलिक विचारधाराएँ एवं विधितंत्र रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
3. मौर्य, एस० डी० (2015), भौगोलिक चिंतन का इतिहास, प्रवालिक पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद।
4. ऐकरमैन, ई०ए० (1965), द साईंस ऑफ ज्यॉग्राफी, नेशनल एकाडेमी ऑफ साईंन्स, नेशनल रिसर्च काउन्सिल पब्लिकेशन,नं० 127, वासिंगटन, डी० सी०।
6. डिकेन्स, आर०ई० (1969), मेकर्स ऑफ मोडर्न ज्योग्राफी, रूटलेज्ड एण्ड केगेन पॉल, लंदन।

❖❖❖